(काव्य संग्रह)

अंतरा-शब्दशक्ति

लफ़्ज़ों में सिमटी..

यादें

डॉ. मौसमी परिहार

लफ़्जो मे सिमटी....यादें

(काव्य संग्रह)

डॉ. मौसमी परिहार

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-11-7

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८© डॉ. मौसमी परिहार

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कंप्यूटर्स, वारासिवनी

'lafzon me simti yaaden by dr. mausmi parihar'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

भूमिका

पद्यमयी रचनाएँ गीत, गज़ल, नज्म़, कविता सभी कल्पनाओं और अनुभवों से बनती है। जिस प्रकार एक-एक फूल से एक सुन्दर माला तैयार होती है ठीक उसी प्रकार सुन्दर शब्दों रूपी फूलों से काव्य-माला, गीत-माला तैयार होती है, जो अपनी सौन्दर्यता का बोध स्वयं कराती है।उसमे निहित शब्द के भावों, अर्थो, रस रूपी सौन्दर्य से, और ये सब श्रोता को भाव-विभोर कर दे, तब जाकर यह सिद्ध होता है, कि यह काव्य-माला अतिसुन्दर है।

युवा मन आज के समय में अत्यधिक व्यस्त है मोबाईल और सोशल मीडिया में। उसे अभी शब्दों की समझ व पहचान वैसी नही है साहित्य से संबंधित लोगो में होती है। आज का युवा काव्य से जुड़ने में सक्षम है क्योंकि उसके पास पर्याप्त साधन है। शब्द के अर्थ को समझने के, काव्य को संयोजित करने, गीतो को गुनगुनाने के, बस ह्नदय में एक प्रेम सी लहर और हलचल होनी आवश्यक है।

"लफ्ज़ों में सिमटी.....यादें " मेरी सहज भावाव्यक्ति का संग्रह है जो उदास भी है, इंतजार में भी है और पहचान में भी और विषेश भी है। कुछ अनुभवों और कल्पनाओं को आकृति दी, कुछ बिम्बात्मक, बिन्दुओं को दृष्टव्य किया है इन गीतो में।

भाषा सरल-सहज, बोलचाल की है अतः सरलता, सुगमता से समझने वाली शब्दो के माध्यम से कुछ भावों को गीतो में अभिव्यक्त किया है। प्रयास किया है कि यह मस्तिष्क पटल पर अंकित होने में सक्षम होगी। "लफ्ज़ों में सिमटी... यादें', के गीत एक अलग खुशबू बिखेरेंगे ऐसा विश्वास है।

यह मेरी प्रथम पुस्तक है अतः लेखन में त्रुटियाँ होना तो स्वभाविक है, समीक्षा और आलोचना के लिए भी तैयार हूँ। ईश्वर व माता-पिता का आशीर्वाद, भाई-बहन का स्नेह और पति का प्रेम हमेशा पथप्रदर्शक रहा है।
मुझे आशा है कि आप सभी का आशीष "लफ्ज़ों में सिमटी.....यादें" को प्रशस्त करेगा।

डॉ. मौसमी परिहार

अनुक्रमणिका

1. लफ़्ज़ो मे सिमटी....यादें	5
2. तेरी याद चली आई	6
3. दर्द	7
4. तन्हाई में तुम्हारा नाम होता है	8
5. वादा निभाया न गया	9
6. जज़्बात	10
7. उसकी याद साथ थी	11
8. कुछ तुम ख़फा	12
9. तुम बहुत याद आते हो	13
10.तुम्हारा वो ख़त	14
11.यारियाँ	15
12.हम गुनगुनाते है	16

लफ्ज़ों में सिमटी.....यादें

न जाने कहाँ गुम हुए वो रात-दिन,
जिए जा रहें है हम तन्हा, तुम्हारे बिन,

कुछ अधूरी बातें, कुछ अधूरी मुलाकातें,
अब तो रह गई बस, वो यादें,
किससे कहें, क्या कहें.....
लफ्ज़ो में सिमटी यादें.....

वो रातें, वो राहें, वो मुलाकातें,
साथ बीते पलों की प्यारी बातें,
मुझे याद है तुम भूल गये,
लफ्ज़ो में सिमटी यादें.....

रूबरू होने के मौके तलाश कर,
मिल कर कभी तो, मुझे प्यार कर,
हर पल याद आई, तुम्हारी ही बातें
लफ्ज़ो में सिमटी यादें.....

माना कि वो और थी यादें और बातें,
तुम्हारे साथ किसी और की थी यादें,
हम तो कुछ भी न कह सके तब भी और अब भी,
बस, लफ्ज़ों में सिमटी यादें.....

तेरी याद चली आई

आज फिर तेरी याद चली आई है,
माना कि बरसों के बाद आई है.....

वो जमाना था, जब रोज मिला करते थे,
हाले दिल हम तुम सुनाया करते थे,
आज फिर अश्कों की बरसात चली आई है,
माना कि बरसों के बाद आई.....
आज फिर तेरी याद चली आई है.....

न पूछ हमसे कि क्यों हुये थे फासले,
वक्त ने दे दी हमें, सजाएँ, वफाओं के बदले,
आज फिर जख्मों की निशानी दिखलाई है,
माना कि बरसों के बाद आई.....
आज फिर तेरी याद चली आई है.....

गिला भी क्यों करें 'मौसमी', उस की बेवफाई का,
मिले न फूल तो, सफर भी रहा काँटों सा,
आज फिर गुलशन में वही वीरानी छाई है,
माना कि बरसों के बाद आई.....
आज फिर तेरी याद चली आई है.....

तुने दिल से मुझे अपनाया नही,
प्यार का रिश्ता भी कभी निभाया ही नहीं,
मेरी वफाओ का बदला, क्या मेरी रूसवाई है,
माना कि बरसों के बाद आई.....
आज फिर तेरी याद चली आई है.....

दर्द

आज दिल के टूटने की आवाज़ नहीं आई,
दर्द बढ़ता गया, दवा कोई काम न आई.....

उसके दर्द को अपना बनाना चाहा,
उसके अश्क़ों को अपना बनाना चाहा,
पर ये चाहत मेरी, किसी काम न आई,
दर्द बढ़ता गया, दवा कोई काम न आई.....

रोते है वो रातों में तन्हाई से लिपट कर,
जीते है वो अपनी ही यादो मे सिमट कर,
कोई दुआ मेरी, उसके किसी कान न आई,
दर्द बढ़ता गया, दवा कोई काम न आई.....

दे दे हक मुझे भी इतना की बाँट लूँ तन्हाई तेरी,
दे दे हक इतना की रो दूँ आकर बाँहों में तेरी,
तेरे गम को अपना बनाने 'मौसमी', तेरे पास चली आई,
दर्द बढ़ता गया, दवा कोई काम न आई.....

माना की लफ़्ज़ों में न होगा बयां, दर्द दिल का,
माना की रिश्ता न होगा तेरा मेरा दिल का,
पर देख तो एक बार, मै तेरा प्यार लेकर आई...
दर्द बढ़ता गया, दवा कोई काम न आई.....

तन्हाई में तुम्हारा नाम होता है

तू मेरी हर गज़ल की शान होता है,
तू मेरी हर तन्हाई का नाम होता है.....

लकीरें जो मेरी हथेली में है, उसमें तेरा बस नाम नहीं,
तू तो किसी गैर की हथेली की शान होता है,
तू मेरी हर तन्हाई का नाम होता है.....

करूँ तो सजदा तुझको भी उस रब की तरह,
तू तो मेरे लिए, उस रब की ही अजान होता है,
तू मेरी हर तन्हाई का नाम होता है.....

नहीं है इंतजार किसी का, नहीं प्यार किसी से,
तू मेरे ही टूटे दिल का ही इक निशान होता है,
तू मेरी हर तन्हाई का नाम होता है.....

बख्श दे थोड़े से रहमोकरम 'मौसमी' पर भी,
तू ही है जो मेरे पास सुबहोशाम होता है,
तू मेरी हर तन्हाई का नाम होता है.....

वादा निभाया न गया

हमने चाहा तो बहुत उनको पर भुलाया न गया,
खुद से किया इक वादा, निभाया ना गया.....

आज हर तरफ तन्हाई का आलम,
खुद के अश्कों को, बहाया न गया.....

ख़ता पर सजा तो सुना दी उसने,
इल्जाम उसे खुद पर लगाया न गया.....

कैसे कह दूँ कि दिल में तुम नही,
इज़हार ए मोहब्बत जुबां से, सुनाया न गया.....

हैरान, परेशान होते दिल के मंज़र 'मौसमी',
और वो कहते, हमसे रिश्ता निभाया न गया.....

क्यों छोड़ा अंधेरों में मुझे तन्हा,
तुमसे भी तो साथ निभाया न गया.....

रिश्ता तो दिल से निभाया मैनें,
पर तुमसे, मुझे अपना बनाया न गया.....

जज़्बात

काश की दिल कभी न लगाया होता,
जज्बातों को किसी से बताया न होता...

आज हम गैर सही तुम्हारे लिए,
काश की तुम्हें अपना न बनाया होता,
जज्बातों को किसी से बताया न होता...

दिल की उदासी का सबब बेवफाई तेरी,
काश की दिल, तुमसे न लगाया होता,
जज्बातों को किसी से बताया न होता...

जिंदगी के कुछ सितम सिर्फ मेरे लिए,
काश कि दर्द का ये रिश्ता निभाया न होता,
जज्बातों को किसी से बताया न होता...

उदास रात क्यों है, क्या बताउँ 'मौसमी',
काश कि तन्हाई को दोस्त न बनाया होता,
जज्बातों को किसी से बताया न होता...

उसकी याद साथ थी

कल फिर तन्हाई की रात थी,
महफिल में मेरे यार, उसकी याद साथ थी.....

चर्चे चले दोस्तों से उसके रातभर,
तो शरमा गए थे, उनकी हर इक बात पर,
ये बात भी मेरे यार, क्या कमाल थी,
महफिल में मेरे यार, उसकी याद साथ थी.....

ये नशा, वो नशा, मिल कर चढ गया,
मै उसकी याद और बातों में गुम गया,
ये बात भी मेरे यार, लाजवाब थी,
महफिल में मेरे यार, उसकी याद साथ थी.....

ये शाम और ये तन्हाई, वो मेरी बाँहो में समाई,
तेरी याद मेरे साथी बहुत बार आई,
ये बात भी मेरे यार, खुशगवार थी,
महफिल में मेरे यार, उसकी याद साथ थी.....

कुछ तुम ख़फा

उम्र गुजर रही है तेरे साथ यारा,
कुछ तुम खफा, कुछ हम खफा.....

है दिल का रिश्ता तेरे साथ प्यारा,
फिर भी तुमने मुझे, प्यार न दिया सारा,
वक्त बेवक्त के होते गिलेशिकवे,
कुछ तुम खफा, कुछ हम खफा.....

मेरी खामोशी, मेरा तेरे लिए प्यार है,
तू न समझ फिर भी मुझे तेरा इंतजार है,
इस वक्त की नजा़कत के होते ये खेल,
कुछ तुम खफा, कुछ हम खफा.....

क्या हुआ गर न समझे, 'मौसमी' के दर्दे दिल को तुम,
गैरों से भी बात करो, पर मेरे रहोगे तुम,
हो खफा, तो मनायेगे , कहेगें हम,
कुछ तुम खफा, कुछ हम खफा.....

तुम बहुत याद आते हो

तुम खामोश रह कर भी बहुत कुछ कह जाते हो,
तन्हा, तन्हाई की शामों में, बहुत तड़पाते हो,

तुम बहुत याद आते हो.....

है सजा शायद यही
तुमसे दिल लगाने की,
और तुम गैरो के साथ में
रहकर शामें बिताते हो, तुम बहुत याद आते हो.....

गुरूर भी है तुम पर
कि मुझे खास माना,
पर ये क्या, कि गैरों के लिए ही
मुझे तन्हा छोड़ जाते हो, तुम बहुत याद आते हो.....

दोस्त कहूँ या कुछ और
सवाल ये मेरे मन में,
और वो कशिश तुम्हारी आँखो की
मुझे अपना बना जाते हो, तुम बहुत याद आते हो.....

लाजमी होगा यही कि,
कर दे इकरार तूभी मुझसे,
प्यार के लिए, प्यार का,
क्यों दिल में दर्द दे जाते हो, तुम बहुत याद आते हो.....

तुम्हारा वो खत

संभाल कर रखा है, आज भी तुम्हारा वो खत,
अब भी याद है मुझे,
वो गुलाबी सर्द शाम,
जब दिया था तुमने मुझे
प्यार के नाम पैगाम,
संभाल कर रखा है, आज भी तुम्हारा वो खत.....

सूखी गुलाब की पत्तियाँ,
वो गुलाबी प्यार की महक,
छूकर मेरे हाथों को,
तुमने दिया था वो पैगाम,
संभालकर रखा है, आज भी तुम्हारा वो खत.....

कुछ बिखेरे अहसासों को समेटे,
कुछ खामोशियों से भरे षब्द,
देखकर ही बस, नजरों को
दिया था, एक इशारा,
वो कागज देकर,
संभालकर रखा है, आज भी तुम्हारा वो खत.....

महफिल में भी तन्हाइ रही,
फिर तो हर पल तेरी याद साथ रही,
दिल में उठा तूफां सा 'मौसमी',
बैचेनी रही, जिसे पढकर
संभाल कर रखा है, आज भी तुम्हारा वो खत.....

यारियाँ

गुजरे हुए वक्त की परछाईयाँ दिख रही,
बरसों के बाद, उस दोस्त की यारियाँ दिख रही,

“बेवफा“कहा था, जिसने कभी महफिल में हमें,
आज “वफा“ की उम्मीद उसे, इस तरफ दिख रही,

परेशां हुआ वो, देख कर मुझे, देखता ही रह गया वो देख कर मुझे,
ये क्या की अब माथें मे उसके, सलवटें दिख रही,

कई रातों से सोया नहीं वो, मेरी याद में,
उसकी आँखों में अरसे की नींद दिख रही,

सिमट कर रह गई, लफ्जों में कुछ सिमटी यादें,
बीतें लम्हों की आज वो, झलकियाँ दिख रही,

चाँद सितारों सी कहाँ रही दोस्ती अब,
चेहरे पर उसक अब भी तो, मतलब परस्ती दिख रही,

जाने-पहचाने चेहरे, नजर आ गये “मौसमी“
अब इस चेहरे में उसे, बचपन की शैतानियाँ दिख रही।

हम गुनगुनाते है

आवाज दे कर हर शाम, आपको बुलाते है,
आओगे लौटकर यही, हम गुनगुनाते है.....

तसव्वुर में तुम्ही, ख्यालों में तुम्ही,
तुम्हे देखने की जुस्तजू में,
गजल कोई गुनगुनाते है.....
आओगे लौटकर यही, हम गुनगुनाते है.....

इबादतें इश्क़ में, हाथ उठे मेरे,
तू किसी गैर के लिए है, सनम मेरे लिए,
फिर भी मिलने आओगे, ये सोच कर रह जाते है.....
आओगे लौटकर यही, हम गुनगुनाते है.....

कहना बहुत कुछ है पर, खामोशियाँ ही बेहतर है,
आंखो के इशारों से, राहों से भी कह जाते है,
आओगे लौटकर यही, हम गुनगुनाते है.....

कर दे दरकिनार, इस उलझन से 'मौसमी',
हवा के झोंके से भी, अब हम कह जाते है,
आओगे लौटकर यही, हम गुनगुनाते है.....

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. मौसमी परिहार

जन्म - 6 मार्च 1981

पति - श्री बिपिन परिहार

माता - श्रीमती प्रभाजी

पिता - श्री गोपाल प्रसाद जी

शिक्षा - एम.ए., एम.फिल (हिन्दी साहित्य)
पी.एच.डी. (शिक्षा शास्त्र)

पता - डी.के.-1/209, दानिश कुँज, कोलार रोड,
भोपाल (म.प्र.) 462042

मो.नं. - 9575444699, 9907669883

ई मेल - mousmiparihar.mplekhika.sangh@gmail.com

कार्यक्षेत्र - सहायक प्राध्यापक (हिन्दी साहित्य)- रविन्द्रनाथ टैगोर वि.वि., रायसेन, भोपाल
पूर्व आकाशवाणी उद्घोषिका - अस्थायी (कार्यक्रम युवा वाणी)
पूर्व दूरदर्शन कार्यक्रम संचालिका - अस्थायी (कार्यक्रम कृषि दर्शन)
सदस्य, मध्यप्रदेश हिन्दी लेखिका संघ

विद्या - भजन, गीत, लघुकथा, कथा व काव्य सृजन (स्वतंत्र लेखन)

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़
आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-11-7

मूल्य- 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com